19

अज्ञापालन का कोई विकल्प नहीं

(मत्ती 7:21–8:1)

बाइबल बताती है कि हमारा उद्धार अनुग्रह से होता है और हम अपने उद्धार को कमा नहीं सकते (देखें इफिसियों 2:8, 9)। इसके साथ ही यह यह भी बताती है कि परमेश्वर का अनुग्रह केवल उन्हीं लोगों के लिए है, जो परमेश्वर के आज्ञाकारी हैं। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने लिखा है कि यीशु "अपने सब आज्ञा मानने वालों के लिए उद्धार का कारण" है (इब्रानियों 5:9)। यीशु ने कहा कि "जो पुत्र की नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है" (यूहन्ना 3:36ख)। हम *अपने* विश्वास को आज्ञा मानने से दिखाते हैं (देखें याकूब 2:14–26), और हम अपने *प्रेम* को आज्ञा मानने से जताते हैं (देखें यूहन्ना 14:15)। हमारा वचन पाठ यह घोषणा करता है कि हम सच्ची *बुद्धि* को आज्ञा मानने से दिखाते हैं। समझदार व्यक्ति वही है, जो यीशु की बात को सुनकर *मानता* है (मत्ती 7:24)। आज्ञा मानने का कोई विकल्प नहीं है।

बातें विकल्प नहीं हैं (7:21-23)

नियम (आयत 21)

आयत 21–23 से हमें पता चलता है कि बातें आज्ञा मानने का विकल्प नहीं हैं। हमारे वचन पाठ में यीशु की बातें "जो मुझे से प्रभु! हे प्रभु, कहता है, उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है" (आयत 21)। कुछ आयतें पहले यीशु ने सकेत फाटक से प्रवेश करने की बात की थी। यहां उसने राज्य में प्रवेश करने की बात की। राज्य में हम सकेत फाटक से ही प्रवेश करते हैं। उस फाटक में से जाकर हम राज्य में प्रवेश कैसे करते हैं? *स्वर्ग के राज्य में* हम *परमेश्वर की इच्छा को* जो *स्वर्ग* है मानकर प्रवेश करते हैं।

यीशु के उपदेश में यहां तक "राज्य" शब्द मुख्यतया मसीहा के राज्य यानी उसके लिए है जिसकी राह यहूदी लोग देख रहे थे।[1] इस राज्य की प्रतिज्ञा कलीसिया की स्थापना में पूरी हो गई थी। हमारे वचन पाठ से एक बात जो बताई जा सकती है वह यह है कि पिता की इच्छा पूरी किए बिना कोई कलीसिया का सदस्य नहीं बन सकता।[2] परन्तु उपदेश के अन्त के निकट आकर यीशु ने अपना ध्यान न्याय के दिन की ओर मोड़ लिया (देखें आयतें 22, 23)। इसलिए आयत 21 में यीशु के दिमाग में स्वर्गीय राज्य की बात ही होगी। बिना परमेश्वर की इच्छा पूरी किए कोई स्वर्ग में प्रवेश नहीं कर सकता।

उस बात की ओर वापस चलते हैं जो यीशु बता रहा था कि बातें आज्ञापालन का विकल्प

नहीं हैं। कुछ लोग उसे "प्रभु" कहते थे। अनुवादित शब्द "प्रभु" (*kurios*) का इस्तेमाल यहां ईश्वरीय पद के लिए हुआ है।[3] विश्वास का एक आरम्भिक अंगीकार यह था कि "यीशु प्रभु है" (देखें 1 कुरिन्थियों 12:3)। हमारे वचन पाठ में जिसकी बात यीशु ने की वे उसे केवल "प्रभु" नहीं बल्कि बार बार जोश और उत्साह का संकेत देते हुएसे "हे पभ, हे प्रभु," कहते थे। यह सब सराहनीय है, पर यीशु को "प्रभु" *कहना* कभी भी प्रभु के रूप में सच्चे मन से अधीनता का स्थान नहीं ले सकता। दुष्टात्मा मानते हैं कि यीशु "परमेश्वर का पवित्र जन" है (मरकुस 1:24; देखें याकूब 2:19); पर अपने उस अंगीकार के बावजूद वे दुष्ट आत्मा ही थे।

यीशु को प्रभु मानने वालों के लिए परमेश्वर की सभी आज्ञाओं को मानने के लिए अपने आपको देना आवश्यक है। अगले भाग में (आयतें 24-27), परमेश्वर की इच्छा को यीशु द्वारा कही गई बातों से बताया गया है (देखें यूहन्ना 8:28; 12:49, 50)। परमेश्वर और यीशु हम से जो कुछ भी करवाना चाहते हैं उसे करने के लिए हमें अपने जीवन देने आवश्यक हैं। लूका में इसके समानान्तर वचन में यीशु ने पूछा, "जब तुम मेरा कहना नहीं मानते तो क्यों मुझे हे प्रभु, हे प्रभु कहते हो" (लूका 6:46)।

जब हम परमेश्वर की इच्छा को मानने की बात करते हैं तो हम पूर्ण आज्ञापालन की बात नहीं कर रहे होते, कोई भी व्यक्ति इसके योग्य नहीं है (देखें यूहन्ना 1:8)। इन अध्ययनों में मैंने पहाड़ी उपदेश के आदर्शों के विषय में अपनी कमियों को माना है। तो फिर परमेश्वर की इच्छा पूरी करने की बात करने पर हमारे मन में क्या होता है? आज्ञापालन जितना काम करना है, उतना ही व्यवहार की भी बात है। हमारा ऐसा व्यवहार हो जो कहता है, "यदि परमेश्वर इसे करने के लिए कहता है, तो मैं भी वही चाहता हूं!" हमें अपनी पूरी योग्यता से परमेश्वर की इच्छा को पूरी करने के लिए समर्पित होने की आवश्यकता है। जे. डब्ल्यू. मैक्गार्वे ने लिखा है कि "हमारे प्रतिदिन के पाप की क्षमा की शर्तों के साथ प्रतिदिन के मेल खाने के साथ, शरीर की हमारी सम्भावित दुर्बलताओं के बीच आज्ञापालन [देखें मत्ती 6:12; प्रेरितों 8:22; 1 यूहन्ना 1:9] ने परमेश्वर का पक्ष सुरक्षित रखा है।"[4]

न्याय का दृश्य (आयतें 22, 23)

उन लोगों का क्या होगा जिनमें ऐसे समर्पण की कमी है? हम डी. मार्टिन लायड जोनस की बात पर आते हैं कि जिसे उसने "इस संसार के अब तक के कहे गए सबसे गम्भीर ... शब्द" नाम दिया है।[5] 22 और 23 आयतों के शब्द। मेरे लिए वे अब तक कहे गए सबसे अफ़सोसजनक शब्द हैं।

इस भाग का आरम्भ होता है, "उस दिन बहुत से लोग मुझ से कहेंगे" (आयत 22क)। "उस दिन" उस दिन को कहा गया है जब मसीह वापस आएगा और सब का न्याय होगा (देखें 2 थिस्सलुनीकियों 1:7-10; 2 तीमुथियुस 1:12; 4:8)। ध्यान दें कि यीशु ने कहा, "उस दिन *बहुत से लोग मुझ से कहेंगे*।" "बहुत से" विनाश के चौड़े मार्ग वाले लोग हैं (मत्ती 7:13); दुख की बात है कि अधिकतर लोग इस बात से अंजान थे कि वे किसी बात पर हैं। परिणामस्वरूप जिस कारण न्याय, "बहुत से" लोग इस बात पर ज़ोर देंगे कि प्रभु उन्हें स्वीकार कर लें।

यीशु के शब्दों पर ध्यान दें: "उस दिन मुझ से लोग कहेंगे," जब हम न्याय के लिए

सिंहासन के सामने खड़े होंगे तो वहां यीशु ही होगा और यीशु ही हमारे भाग्य का फैसला करेगा। बाद में उसने कहा

> तब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा में आएगा, और सब स्वर्ग दूत उसके साथ आएंगे तो वह अपनी महिमा के सिंहासन पर विराजमान होगा। और सब जातियां उसके साम्हने इकट्ठी की जाएंगी; और जैसा चरवाहा भेड़ों को बकरियों से अलग कर देता है, वैसा ही वह उन्हें एक दूसरे से अलग करेगा। और वह भेड़ों को अपनी दहिनी ओर और बकरियों को बाईं ओर खड़ी करेगा (मत्ती 25:31-33)।

उस समय यीशु पहाड़ी पर बैठा था पर एक दिन वह सिंहासन पर बैठेगा। हमारे वचन पाठ में उसके सुनने वाले यह निर्णय कर रहे थे कि वह उसकी शिक्षा को माने या नहीं। पर उस दिन वह निर्णय लेगा कि उन्हें ग्रहण करना है या नहीं।

यीशु ने आगे कहा, ''उस दिन बहुत से मुझ से कहेंगे, हे प्रभु, हे प्रभु, क्या हम ने तेरे नाम से भविष्यवाणी नहीं की, और तेरे नाम से दुष्टात्माओं को नहीं निकाला, और तेरे नाम से बहुत से आश्चर्यकर्म नहीं किए?'' (आयत 22)। यह आश्चर्यकर्मों के युग के दौरान कहा गया था, जिसका आरम्भ यीशु की सेवकाई के साथ हुआ और प्रेरितों और उनके जीवन काल तक बढ़ाया गया जिन के ऊपर उन्होंने हाथ रखे थे। समय के उस काल में, लोग भविष्यवाणी करते (परमेश्वर के लिए बोलते), लोगों में से दुष्टात्माओं को निकालते और अन्य आश्चर्यकर्म के दानों का प्रदर्शन करते थे (देखें मरकुस 16:17, 18; प्रेरितों 2:43; 13:1)।

क्या यीशु द्वारा दिखाए गए लोग वास्तव में यह काम करते थे? यदि आप यीशु और प्रेरितों के समय में होते, तो यह सम्भव है कि वे करते थे। उदाहरण के लिए पहाड़ी पर यीशु की बातें सुनने वालों में से एक यहूदा था। यहूदा को अन्य प्रेरितों की तरह ही आश्चर्यकर्म करने की योग्यता दी गई थी (देखें मत्ती 10:1-4)। इसके अलावा मैं एक प्रेरित को किसी पर उन्हें आश्चर्यकर्म करने की योग्यता देने के लिए उस पर हाथ रखने (देखें प्रेरितों 8:18) और फिर बाद में उस व्यक्ति के प्रभु के अविश्वासी होने की कल्पना कर सकता हूं। 1 कुरिन्थियों 13 अध्याय में पौलुस ने संकेत दिया कि भविष्यवाणी का दान होने के बावजूद प्रेम की कमी होना सम्भव था (आयत 2)।

आश्चर्यकर्म करने की योग्यता अपने आप में कभी भी अविवादित प्रमाण नहीं था कि कोई परमेश्वर को भाता है। पुराने नियम में परमेश्वर ने बिलाम से बात की और उसके मुंह में शब्द डाले (देखें गिनती 22:9, 35, 38), पर बिलाम को दोषी ठहराया गया ''जिसने अधर्म की मजदूरी को प्रिय जाना'' (2 पतरस 2:15)। नये नियम में, पौलुस ने कहा कि कुरिन्थिुस के मसीही लोगों में किसी आश्चर्यकर्म के दान की कमी नहीं थी (देखें 1 कुरिन्थियों 1:7; 12:1, 4-11), तौभी उस नगर की मण्डली आत्मिक समस्याओं की बहुतायत से पीड़ित थी।

यह भी सम्भव है कि मत्ती 7:22 वाले लोग इस सोच में कि उन्होंने आश्चर्यकर्म किए हैं शैतान द्वारा भ्रमित किए गए थे। जैसा कि हम ने पीछे देखा था, यीशु ने कहा कि ''बहुत से झूठे भविष्यवक्ता उठ खड़े होंगे'' (मत्ती 24:11)। ''उस अधर्मी'' की बात करते हुए पौलुस ने कहा कि उसका आना ''शैतान के कार्य के अनुसार सब प्रकार की झूठी सामर्थ, और चिह्न,

और अद्‌भुत काम के साथ'' होगा (2 थिस्सलुनीकियों 2:9)। इस सम्भावना के सम्बन्ध में कि कोई आश्चर्यकर्म करने की योग्यता होने की बात से गुमराह हो सकता है, एच. लियो. बोलस ने लिखा है कि ''लोग भ्रमित हो सकते हैं, भ्रमित मर सकते हैं, और भ्रमित ही न्याय में परमेश्वर के सामने आ सकते हैं।''[6]

हो सकता है कि हमारे वचन पाठ वाले लोगों ने वही किया जो उन्होंने कहा कि उन्होंने किया है, या हो सकता है कि उन्होंने न किया हो। जो भी हो, स्पष्टतया उन्हें यह लगता था कि उन्होंने यीशु के नाम में बहुत से अद्‌भुत काम किए हैं और इससे वे विशेष व्यवहार किए जाने के योग्य बन जाते हैं। उनकी बातों में घमण्ड है जो हमें उस फरीसी का स्मरण दिलाता है जिसने परमेश्वर को बताया कि वह कितना बड़ा आदमी है: ''हे परमेश्वर, मैं तेरा धन्यवाद करता हूं कि मैं दूसरे मनुष्यों के समान अन्धेर करने वाला, न्यायी और व्यभिचारी नहीं। ... मैं सप्ताह में दो बार उपवास रखता हूं; मैं अपनी सब कमाई का दवां अंश भी देता हूं'' (लूका 18:11, 12)।

प्रासंगिकता बनाने के लिए हमें किसी के न्याय के दिन प्रभु के किसी से यह कहने की कल्पना कर सकते हैं ''प्रभु, क्या मैं कलीसिया की सब आराधनाओं में नहीं जाता था, क्या मैं अच्छा नैतिक जीवन नहीं जीता था, और तेरे नाम में बहुतों की सहायता नहीं करता था?'' मुझे इस पर विचार करने से परेशानी होती है, पर मैं एक प्रचारक के यह कहने की कल्पना कर सकता हूं, ''प्रभु, क्या मैंने उन सभी वर्षों में तेरे लिए बड़े विश्वास के साथ प्रचार नहीं किया, बहुत से लोगों को बाइबल क्लासों में नहीं पढ़ाया, धार्मिक लेख नहीं लिखे, और तेरे नाम में कई परेशान लोगों को सांतवना नहीं दी?''[7] यह सभी गतिविधियां सराहनीय हैं, पर इन में से कोई भी परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध होने का स्थान नहीं ले सकतीं।

इस दुखद, दुखद और दुखद आयत के लिए दृश्य तैयार हो चुका है: ''तब मैं उन से खुलकर कह दूंगा मैंने तुम को कभी नहीं जाना। हे कुकर्म करने वालो, मेरे पास से चले जाओ'' (आयत 23)। *Homolegeo* का अनुवाद ''खुलकर कहना'' वही शब्द है जिसे आमतौर पर ''अंगीकार'' अनुवाद किया जाता है (जैसे मत्ती 10:32)।[8] ''इस संदर्भ में [इसका] अर्थ कानूनी घोषणा करना है।''[9] यह न्याय के सिंहासन पर बैठने वाले का गम्भीर आदेश है।

आदेश क्या था? पहला, ''मैंने तुम को कभी नहीं जाना।'' इसका अर्थ यह नहीं है कि प्रभु उनके अस्तित्व से परिचित नहीं था या उसे मालूम नहीं था कि उन्होंने क्या किया है। बाइबल में ''जानना'' शब्द का इस्तेमाल आमतौर पर सम्बन्ध व्यक्त करने के लिए किया जाता है।[10] पुराने नियम में परमेश्वर ने इस्राएल जाति से कहा था, ''पृथ्वी के सारे घरानों में से मैंने केवल तुम्ही को जाना है'' (आमोस 3:2क; KJV)। नये नियम में पौलुस ने कहा, ''यदि कोई परमेश्वर से प्रेम रखता है, तो परमेश्वर उसे पहचानता है'' (1 कुरिन्थियों 8:3); ''प्रभु अपनों को पहचानता है'' (2 तीमुथियुस 2:19)। यीशु कह रहा था कि जिनका न्याय हो रहा था वे उसके नहीं थे यानी उसके साथ उनका उद्धार वाला सम्बन्ध नहीं था। उसकी बात कि ''मैंने तुम्हें *कभी नहीं* जाना'' संकेत दे सकता है कि वचन के बाइबली अर्थ में वे कभी मसीही नहीं बने थे, चाहे निश्चित रूप में उन्हें लगता था कि वे परमेश्वर की सन्तान हैं।

फिर यीशु ने मन को चीर देने वाले ये शब्द कहे: ''हे कुकर्म करने वालो, मेरे पास से चले जाओ।''[11] न्याय के दिन यीशु अपनी बाईं ओर वालों से कहेगा, ''हे शापित लोगो, मेरे सामने

से उस अनन्त आग में चले जाओ, जो शैतान और उसके दूतों के लिए तैयार की गई है'' (मत्ती 25:41)। फिर ''ये अनन्त दण्ड भोगेंगे,'' ''प्रभु के सामने से और उसकी शक्ति से तेज़ से दूर होकर'' (मत्ती 25:46क; 2 थिस्सलुनीकियों 1:9)।

यीशु ने इन लोगों को ''कुकर्म करने वाले'' नाम दिया।[12] फिलिप्स के अनुवाद में ''बुराई के पक्ष में काम करने वाले'' है! ये लोग वे नहीं हैं जिन्हें हम ''बुरे'' कहेंगे। ये तो धार्मिक लोग थे। स्पष्टतया वे अपने धार्मिक गतिविधि में गम्भीर और विवेकी थे। उन्हें लगता था कि वह परमेश्वर की सेवा कर रहे हैं। तो फिर उन्हें कुर्म करने वाले क्यों कहा गया? शायद इसलिए क्योंकि उन्हें लगा कि परमेश्वर चाहता है कि कुछ भले काम किए जाएं। शायद इसलिए क्योंकि उन्हें लगा कि ''प्रभु के नाम में'' काम करना उन्हें परमेश्वर की सन्तान के रूप में कहलाने के योग्य बना देगा। शायद इस लिए क्योंकि उन्हें लगा कि भले काम करने से किसी प्रकार वे स्वर्ग में स्थान काम लेंगे। परन्तु यीशु ने स्पष्ट कर दिया कि उन्होंने परमेश्वर की जो स्वर्ग में है इच्छा को पूरा नहीं किया था। एक तरह से उन्होंने परमेश्वर के नियमों के बजाय अपने ही मनों की बात मानी थी। इसलिए परमेश्वर की दृष्टि में वे ''कुकर्मी'' लोग थे यानी वे लोग जिन्होंने उसकी व्यस्था का विरोध किया। फिर से मैं कहता हूं कि बातें आज्ञापालन का विकल्प नहीं हैं।

मुझे गलत न समझें। प्रभु के रूप में यीशु का अंगीकार करना महत्वपूर्ण है, बल्कि आवश्यक है। पौलुस ने लिखा है, ''यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जान कर अंगीकार करे, और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार जाएगा'' (रोमियों 10:9)। यीशु ने कहा, जो कोई मनुष्यों के सामने मुझे मान लेगा, उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने मान लूंगा (मत्ती 10:32)। तौभी यीशु को ''प्रभु'' कहना बेकार है जब इस अंगीकार को उसकी इच्छा पूरी करने के समर्पण के द्वारा समर्थन न हो। *होंठ* और *जीवन* दोनों ही उसे समर्पित होने आवश्यक हैं।

सुनना कोई विकल्प नहीं है (7:24-27)

नियम

फिर यीशु ने घोषणा की कि केवल सुनना ही आज्ञापालन का विकल्प नहीं है। पहाड़ी उपेदश के अन्तिम भाग में यीशु ने उनकी बात की जो उसकी बातों को मानते हैं और जो उन्हें नहीं मानते उसने कहा कि पहले वाले लोग समय और अनन्तकाल के तूफ़ानों के थपेड़े पड़ने पर खड़े रहेंगे, जबकि दूसरे वाले लोग नष्ट हो जाएंगे।

परमेश्वर का वचन सुनना आवश्यक है। मूसा ने लोगों को ताड़ना की थी, ''हे इस्राएल, सुन'' (व्यवस्थाविवरण 6:4), नये नियम में यह ताड़ना कई बार मिलती है, ''जिसके सुनने कान हों, वह सुन लें'' (मत्ती 11:15; देखें 13:9, 43; मरकुस 4:9, 43; 7:16; लूका 8:8; 14:35)। पौलुस ने कहा कि ''विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से आता है'' (रोमियों 10:17)। परन्तु परमेश्वर के वचन को सुनना ही या इसे समझना भी काफ़ी नहीं है। ''बीज बोने वाले के दृष्टांत'' में (लूका 8:4-15), लोगों के चारों वर्गों ने वचन को सुना (आयतें 12-15), पर परमेश्वर के लिए फल चारों में से केवल एक ही लाया (आयतें 8, 15)।

जो कुछ हम सुनते हैं उस पर अमल किए बिना सुनना अफल रहना है यानी इससे कुछ प्राप्त नहीं होता। आत्मिक मामलों में इससे भी बुरा यह है कि यह प्रति उपज है यानी यह प्राण को दोषी ठहरा सकता है। जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट ने लिखा है कि ''बाइबल पढ़ने के लिए खतरनाक किताब है।''[13] और ए. टी. रॉबर्टसन ने कहा है, ''प्रवचन सुनना खतरनाक काम है।''[14] खतरनाक, जब हम उस पर जो हमने पढ़ा और सुना होता है कछ करते नहीं हैं। हमें सीखना और फिर *करना* आवश्यक है।

समझदार बनाने वाला (आयतें 24, 25)

यीशु ने दो मकान बनाने वालों के प्रसिद्ध दृष्टांत से अपनी बात पर ज़ोर दिया। संसार भर में, बच्चे गाते हैं, ''चट्टान पर बुद्धिमान ने बनाया आपना घर ...।'' यीशु ने पहले बुद्धिमान घर बनाने वाले की बात की: ''इसलिए जो कोई मेरी ये बातें सुनकर उन्हें मानता है, वह उस बुद्धिमान मनुष्य के समान ठहरेगा जिसने अपना घर चट्टान पर बनाया'' (मत्ती 7:24)। अनुवादित शब्द ''बुद्धिमान'' (*phronimos*) का अर्थ है ''दूरदर्शी, विवेकशील।''[15]

''मेरी ये बातें'' विशेषकर पहाड़ी उपदेश में यीशु की बातों को कहा गया है, पर यह शब्द उसकी कही सब बातों पर लागू किए जा सकते हैं। यहूदी हाकिमों को उसने बताया था, ''जो तुझे तुच्छ जानता है ओर मेरी बातें ग्रहण नहीं करता है उस को दोषी ठहराने वाला तो एक है: अर्थात जो वचन मैं ने कहा है, वही पिछले दिन में उसे दोषी ठहराएगा'' (यूहन्ना 12:48)। यही बात बाद में परमेश्वर की प्रेरणाा जाए हुए उसके प्रेरितों की बातों पर लागू हो सकती है। अपनी मृत्यु से पूर्व, यीशु ने अपने प्रेरितों को बताया था कि वह पवित्र आत्मा भेजेगा (यूहन्ना 14:16, 17), जो उन्हें वह सब जो कुछ उसने उन्हें सिखाया था स्मरण दिलाएगा (आयत 26)। पूरे नये नियम को ''यीशु मसीह का नया नियम'' माना जाता है। मसीह की बातों पर अमल करने का अर्थ नये नियम की शिक्षा पर अमल करना है। जो लोग ऐसा करते हैं उनकी तुलना उस बुद्धिमान से की जा सकती है जिसने चट्टान पर अपना घर बनाया था।

किसी भी ढांचे की मज़बूती उसकी नींव पर निर्भर होती है। फलस्तीन केऊबड़ खाबड़ मैदानों में बड़ी बड़ी विशाल चट्टानें हैं, जिस कारण यह ढूंढ़ना कि किस चट्टान पर बनाया जाए कठिन नहीं होगा। यदि धरातल पर तैयार उपयुक्त चट्टान की नींव न मिले तो उसे खोदना पड़ता था। मैदानी उपदेश में यीशु ने कहा कि उसकी बातों पर अमल करने वाला व्यक्ति ''उस मनुष्य के समान है, जिसने घर बनाते समय भूमि गहरी खोदकर चट्टान पर नींव डाली'' (लूका 6:48क)।

यीशु ने आगे कहा, ''और मेंह बरसा और बाड़ें आईं, और आंधियां चली, और उस घर पर टक्करें लगीं'' (मत्ती 7:25क)। उस घर को ऊपर से बारिश से लताड़ा गया, नीचे से बाड़ों से, और आस-पास की ओर से आंधियों से। इस रूपक को समझने के लिए फलस्तीन के मैदान के में कुछ जानकारी होना सहायक हो सकता है। साल के अधिकतर समय में भूमि सूखी रहती और उसमें कई सूखे दर्दे थे, जिनमें से कुछ में नीचे रेत होती। बारिश के मौसम में ये दर्रे पानी के सैलाब से भर जाते जिससे रास्ते में आने वाली हर चीज़ पानी में बह जाती।[16] यीशु के संदेश को समझने के लिए इस दृश्य के कोलाहल की कल्पना करने की कोशिश करें: बारिश गिरती है,

आंधी गुर्राती है और लहरें घर पर बजती हैं![17]

"एक मिनट रुकना!" कोई आपत्ति कर सकता है। "यह तो बुद्धिमान बनाने वाला है। यह तो सुनकर मानने वाला आदमी है। बेशक बुद्धिमान और आज्ञा मानने वाले लोगों पर मूर्ख और आज्ञा न मानने वाले लोगों की तरह तूफ़ान नहीं आते!" हां, यीशु के पे चलने वालों पर वैसे ही तूफ़ानी मौसम आते हैं जैसे उसके पीछे चलने वाले से इनकार करने वालों पर।

इस संसार में तूफ़ान हैं। हमारे जीवन बीमारी, निराशाओं, दुख, विश्वासघात और सताव से लताड़े जा सकते हैं। बुढ़ापे और मृत्यु के आने की चुनौतियां हमें घबरा सकती हैं। इससे भी बड़ा परिणाम इस संसार के आगे का यानी न्याय के दिन परख का समय है। इससे पिछली आयतों के प्रकाश में (आयतें 22, 23), यीशु के दिमाग में सम्भवतया यह सबसे ऊपर था। बाइबल सिखाती है ...

> सो हम में से हर एक परमेश्वर को अपना अपना लेखा देगा (रोमियों 14:12)।
>
> क्योंकि अवश्य है, कि हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के सामने स्थिर रहे (2 कुरिन्थियों 5:10)।
>
> ... जैसे मनुष्यों के लिए एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है (इब्रानियों 9:27)।

बारिश, बाढ़ों और तूफ़ान से चोटें लगने पर बुद्धिमान के घर का क्या हुआ? "... परन्तु वह नहीं गिरा क्योंकि उसी नेव चट्टान पर डाली गई थी" (मत्ती 7:25ख)। यह खड़ा रहा क्योंकि यह ठोस नींव पर बनाया गया था। हमारे जीवन भी ठोस चट्टान पर बने होने आवश्यक हैं (देखें 1 यूहन्ना 2:17)।

कहा जाता है कि यीशु ने यह नहीं कि बुद्धिमान ने "एक चट्टान" (*a* rock) पर बनाया बल्कि "चट्टान" (*the* rock) के ऊपर बनाया।[18] शायद वह गुप्त रूप में अपने आप को "चट्टान" बता रहा था (देखें 1 कुरिन्थियों 3:11)। यदि ऐसा था भी[19] तो उसका ज़ोर चट्टान पर नहीं बल्कि इस बात पर था कि कोई चट्टान पर कैसे *बनाता है*–उसकी सुनकर या फिर जो वह कहता है वैसे ही करके। जो कुछ यीशु कहता है केवल उसे जानना ही काफ़ी नहीं है बल्कि हमें वह करना भी आवश्यक है जो वह कहता है उसकी शिक्षा की प्रशंसा करना ही काफ़ी नहीं बल्कि हमें उस पर अमल करना भी आवश्यक है। यीशु की बातों को केवल सिखाना और उनका प्रचार करना ही काफ़ी नहीं है। प्रचार करना आवश्यक तो है पर यह कभी भी उसे व्यवहार में लाने का स्थान नहीं ले सकता। यीशु की आज्ञा मानना आवश्यक है। तभी हमें उसकी बातों की गहरी समझ मिलेगी और फिर हम उसकी प्रशंसा कर पाएंगे और उसे इसी प्रकार से प्रसन्न किया जा सकता है।

दो बनाने वालों के बच्चों के गीत में, अन्तिम आयत इस प्रकार है:

> सो अपना घर प्रभु यीशु मसीह पर बनाओ
> ... और आशिषें नीचे आएंगी।

आशिषें नीचे आती हैं जब प्रार्थनाएं ऊपर जाती हैं ... ।[20]

जब मैं बच्चों के साथ गाता हूं मैं समझाता है कि दो बनाने वालों के बारे में यीशु ने क्या कहा और फिर बच्चों के लिए गाने को नये शब्द सुझाता हूं:

सो अपना जीवन प्रभु के वचन पर बनाओ
... और आशिषें नीचे आएंगी।
आशिषें नीचे आती हैं जब उसकी इच्छा मानते हैं। ...[21]

मूर्ख बनाने वाला (आयतें 26, 27)

आयत 26 में यीशु ने अपना ध्यान बनाने वाले मूर्ख की ओर किया: "फिर भी जो कोई मेरी ये बातें सुनता है और उन पर नहीं चलता वह उस निर्बुद्धि मनुष्य के समान ठहरेगा जिसने अपना घर बालू पर बनाया।" अनुवादित शब्द "मूर्ख" (moros) वही शब्द है जिससे हमें अंग्रेज़ी का moros शब्द मिला है। इसका अर्थ "मन्दबुद्धि, आलसी ... नासमझ, बेवकूफ़" है।[22]

घर बनाने के रूपक पर विचार करते हुए हम बनाने के ढंग या बनाने की सामग्री की बात की परीक्षा में पड़ सकते हैं (देखें कुरिन्थियों 3:12, 13)। परन्तु यीशु के उदाहरण में दोनों घरों का फर्क केवल नींव का है। दोनों घरों का नक्शा एक ही हो सकता है। उन्हें बनाने में एक ही सामग्री का इस्तेमाल हुआ हो सकता है। बाहर से वे बिल्कुल एक जैसे दिखाई देते हो सकते हैं। स्पष्टतया वे एक ही जगह पर थे, क्योंकि जो तूफ़ान एक मकान को लगा उसी ने दूसरे को भी मारा। अन्तर केवल नींव का था। बुद्धिमान ने चट्टान पर बनाया था जबकि मूर्ख ने रेत पर बनाया था।

संदेहवादी लोग ज़ोर देकर कह सकते हैं, "परन्तु कोई इतना मूर्ख नहीं होगा कि वह अपना घर रेत पर बनाए।" वास्तव में कई भौतिक ढांचे अस्थिर आधार पर बने हैं। एक प्रसद्धि उदाहरण पीसा का मीनार है, जो मलबे से भरी ज़मीन पर बनाया गया था।[23] थोड़ी देर बाद ही मीनार झुकने लगा था। आज मीनार को गिरने से बचाने के लिए बहुत पैसा खर्च किया जा रहा है। बेशक यीशु के दिमाग में वास्तविक घर बनाने वाले नहीं थे। उसकी चिन्ता घर बनाने की नहीं बल्कि जीवनों को बनाने की थी। दुखद तथ्य यह है कि हर रोज़ व्यवहार और कार्य में बहुत से लोग मूर्ख बनाने वाले की बराबरी करते हैं। लोग बिना उचित तैयारी के विवाह करने की जल्दी करते हैं। लोग बिना सावधानी पूर्वक जांच पड़ताल में वित्तिय सौदे कर लेते हैं। अफ़सोस की बात है कि यही बात धर्म में भी है। बहुत से लोग बिना समय लिए और अपने जीवनों को युगों की चट्टान को दृढ़ता से लगाने के प्रयास में आत्मिक सन्तुष्टि चाहते हैं।

मूर्ख व्यक्ति ने पक्की नींव की कोई चिन्ता नहीं की जिस कारण उसका घर बुद्धिमान व्यक्ति के घर से जल्दी बन गया। मैं उसे अपने नये घर में अपने परिवार को लाने पर घूरने की कल्पना कर सकता हूं: "हा, हा, हा," वह दूसरे बनाने वाले से कहता है, "मैंने अपना घर आधे समय में बना लिया!" परन्तु फिर, "मेंह बरसा, और बाढ़ें आईं, आंधियां चलीं, और उस घर पर टक्करें लगीं और वह गिरकर सत्यानाश हो गया" (मत्ती 7:27)।[24] आत्मिक रूप में कहें तो यह टुकड़े टुकडे होना जीवन के तूफ़ानों के लगने पर आमतौर पर आरम्भ होता है; पूरी तरह से

सत्यानाश होना न्याय के दिन में देखा जाएगा। कइयों ने अपने आप को इस जीवन के भौतिक तूफ़ानों से बचाने के लिए आड़ें बना ली हैं; पर अन्त के दिन में मनुष्य की बनाई आड़ हर सुरक्षा बेपर्द हो जाएगी। परमेश्वर के सामर्थी सिंहासन के सामने सब लोग असहाय हो जाएंगे। फिर जो लोग तैयार नहीं होंगे उनका बड़ा विनाश होगा। यीशु ने अपने बेहतरीन उपदेश की समाप्ति यहां सहलाने वाली बातों से नहीं बल्कि ज़ोरदार *धमाके* से की!

यीशु के संदेश में ना समझने वाली कोई बात नहीं है कि उसकी इच्छा को सुनना और जानना ही काफ़ी नहीं है; हमें वैसे ही *करना* भी आवश्यक है जैसा उसने हमें करने को कहा है। बोल्स ने लिखा है "*सुनना* और फिर *करना* ना बेकार से भी बदतर है; ऐसा सुनना केवल दोष को बढ़ाता ही है; जितना अधिक सुनने वाले को अपने कर्त्तव्य का पता होता है उतना ही आज्ञा न मानने पर वह अधिक दोषी होता है" (देखें याकूब 4:17)। मैं फिर कहता हूं कि इसका अर्थ यह नहीं है कि हम पूर्ण आज्ञापालन के योग्य हो गए हैं, पर हमारे मनों का लक्ष्य और मंशा अपनी पूरी योग्यता के साथ परमेश्वर की इच्छा को *करना* होना चाहिए। सुनना आज्ञा मानने का विकल्प नहीं है।

सारांश

हम पहाड़ी उपदेश पर अपने अध्ययन के अन्त में आ गए हैं। इस उपदेश के बारे में, एल्बर्ट बार्नस ने लिखा है, "सभी भाषाओं में ऐसी कोई बातचीत नहीं है जिसे शुद्धता और सत्यतता और सुन्दरता और प्रतिष्ठा के लिए इसके साथ मिलाया जा सकते।"[26] उम्मीद है कि हमारा इकट्ठे समय बिताना आपको उस मूल्यांकन के साथ सहमत होने को और भी विवश कर देता है।

उपदेश को पहली बार सुनने वालों को इसका असर देखते हैं। "जब यीशु ये बातें कह चुका,[27] तो ऐसा हुआ कि भीड़ उसके उपदेश से चकित हुई" (मत्ती 7:28)। यीशु ने विशेष रूप से ये बातें अपने चेलों (देखें 5:1, 2) से की थी जो पहले ही उसके पीछे चलने को समर्पित थे; परन्तु स्पष्टतया उसके आस पास जमा हुई "भीड़" (देखें 4:25; 5:1; 7:28) ने भी उसकी बातें सुनीं। ये लोग उसकी शिक्षा से "चकित" थे। अनुवादित शब्द "चकित हुई" का यूनानी शब्द (*ekplesso*) एक मज़बूत शब्द है। इसका अर्थ "आपा खो देना,"[28] "लाजवाब होना,"[29] "हक्का बक्का" होना (KJV)।

भीड़ यीशु की शिक्षा से इतनी हक्की-बक्की क्यों रह गई? क्योंकि "क्योंकि वह उनके शास्त्रियों के समान नहीं परन्तु अधिकारी की समान उन्हें उपदेश देता था"[30] (7:29)। "शास्त्री लोग पढ़े लिखे थे जिनको पास व्यवस्था और परम्परा की प्रतियां समभाली हुई थी, और उसकी व्याख्या करते थे।"[31] शिक्षा देते समय वे असीमित अधिकारियों का हवाला देते थे: "रब्बी ख के अधिकार पार रब्बी क का क्या कहना है और रब्बी ग के अधिकार पर रब्बी ख क्या कहता है, और रब्बी घ के अधिकार पर रब्बी ग क्या कहता है, वगैरा वगैरा।"[32] इन प्रवचनों के नमूने यहूदी तालमुड में सुरक्षित रखे गए हैं। रोबर्टसन ने उन्हें "मानवीय इतिहास की हर कल्पना की जा सकने वाली समस्या पर अलग टिप्पणियों का सबसे नीरस संग्रह" कहा है।[33]

शास्त्रियों के विपरीत यीशु "अधिकारी की नाईं" बात करता था (देखें मत्ती 28:18)। शास्त्री लोग "अधिकार *के द्वारा*" बात करते थे जबकि यीशु "अधिकार से" बात करता था।[34]

शास्त्री कहते थे, ''फलां-फलां रब्बी ने कहा'' जबकि यीशु कहता था, ''मैं *तुम से* कहता हूं।'' (मत्ती 5:18, 20)।''अपनी बातों यीशु के पास अपनी बातों के अधिकार की प्रामाणिकता अपने आप होती थी।''[35]

कुछ लोग पहाड़ी उपदेश की महानता को तो मानते हैं पर वे पहाड़ पर बोलने वाले की महानता को मान नहीं पाते हैं। उपदेश की महानता बोलने वाले की महानता पर निर्भर करती है। फिर, कुछ लोग बिना इस बात का अहसास किए कि ''... पहाड़ी उपदेश पहाड़ पर उद्धारकर्त्ता से अलग रहकर कुछ नहीं है''[36] पहाड़ी उपदेश के उच्च मानदण्ड की सराहना करते हैं। यीशु के द्वारा हमें भीतरी सामर्थ मिली है (देखें यूहन्ना 16:33; 1 यूहन्ना 5:4)। यीशु के द्वारा, गिर पड़ने पर हमें क्षमा किया जाता है (देखें इफिसियों 1:7)।

इसलिए अपने अध्ययन की समाप्ति पर मैं आपका ध्यान उसकी ओर लगाता हूं जिसने पहाड़ी उपदेश दिया। भीड़ उसके उपदेश से चकित और हक्की बक्की थी। क्या आप चकित और हक्के बक्के हुए हैं? उसे उपदेश देते हुए सुनकर भीड़ उसके पीछे हो ली थी। क्या आप हुए हैं? उसके महान उपदेश का अध्ययन करने के बाद क्या आप उसके पीछे चलने को तैयार हैं? क्या आप उसकी इच्छा पूरी करने के लिए अपने आपको समर्पित करने को तैयार हैं? आशिष केवल उन्हीं को मिलेगी जो उसकी आज्ञा मानते हैं। इस और अगले जीवन के तूफ़ानों में केवल वही लोग ठहर सकते हैं जो उसकी बातों को सुनते और मानते हैं।

एक अन्तिम बात: पहाड़ पर बोलने वाला

इस पाठ में मैंने ध्यान दिलाया है कि कुछ लोग पहाड़ी उपदेश की महानता को स्वीकार करते हैं, पर वे पहाड़ पर बोलने वाले की महानता को नहीं मानते हैं। यह देखने के लिए कि यीशु कौन था उपदेश में पाए जाने वाले हवालों पर ध्यान दें। धन्य वचनों में, यीशु ने कहा, ''धन्य हो, तुम, जब मनुष्य *मेरे कारण* तुम्हारी निन्दा करें, और सताएं और झूठ बोल बोलकर तुम्हारे विरोध में हर प्रकार की बुरी बात कहें। आनन्दित और मगन होना क्योंकि तुम्हारे लिए स्वर्ग में बड़ा फल है'' (मत्ती 5:11, 12क)। प्रतिज्ञा यह है कि *यीशु की खातिर* सताए जाने वाले लोग स्वर्ग में जाएंगे! अध्याय 5 में भी यीशु बात की वह व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं को ''पूरा करने'' आया (आयत 17)। यह काम केवल मसीहा ही कर सकता था। फिर उसे यह कहते हुए कि ''तुम सुन चुके हो कि कहा गया था ... ; परन्तु *मैं* तुम से यह कहता हूं'' (आयतें 27, 28क; देखें आयतें 21, 22, 31-34, 38-44)।

यीशु के मसीहा होने और उसके परमेश्वर होने के दावों के बारे में हमें इस पाठ के वचन पाठ से अधिक देखने की आवश्यकता नहीं है। 7:22, 23 में यीशु ने संकेत दिया कि अन्त के दिन न्याय के सिंहासन पर *वही* बैठा होगा। फिर, आयतें 24 और 26 में यीशु ने परमेश्वर की इच्छा और अपनी बातों को एक समान बताया। यीशु ने ईश्वरीयता का दावा किया।

मैं किसी संदेहवादी की यह उत्तर देने की कल्पना कर सकता हूं, ''हो सकता है कि यीशु मानता हो कि वह ईश्वरीय है यानी परमेश्वर का एक विलक्षण पुत्र है। परन्तु यदि वह मानता था, तो यही बात दिखाती है कि वह कितना गुमराह और पागल था।'' जॉन आर. डब्ल्यू. ने ऐसे सोच वाले व्यक्ति को उत्तर दिया है: ''क्या यह गम्भीरता पूर्वक माना जा सकता है ... कि पहाड़ी

उपदेश की इतनी उच्च नैतिकताएं किसी पागल के दिमाग की उपज हैं? इस निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए अनिष्ठावाद के उच्च स्तर की आवश्यकता है।''

यदि आप उसे समर्पित हुए बिना जिसने यह उपदेश दिया पहाड़ी उपदेश का अध्ययन करते हैं, तो आप इस प्रवचन के सबसे महत्वपूर्ण पहलू को समझे नहीं हैं। इस उपदेश के अर्थ तो यीशु ही देता है। इस उपदेश को प्रामाणिकता तो यीशु ही देता है। ''परमेश्वर को उसके दान (यीशु) के लिए जो वर्णन से बाहर हैं, धन्यवाद हो'' (2 कुरिन्थियों 9:15)![37]

टिप्पणियां

[1]इस पुस्तक में पहले आए पाठ ''इस रीति से प्रार्थना किया करो'' पाठ में इस प्वायंट पर चर्चा देखें। [2]यहां पर आप बता सकते हैं कि प्रभु की कलीसिया में मिलाए जाने के लिए क्या क्या करना आवश्यक है (देखें प्रेरितों 2:36–38, 41, 47)। [3]*Kurios* के कई अर्थ हो सकते हैं, पर आयतें 21 और 22 में संदर्भ यह संकेत देता है कि यह ईश्वरीय पद के रूप में देने के लिए है। [4]जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे एण्ड फिलिप वाई. पैंडल्टन, *दि फोरफोल्ड गॉस्पल और ए हारमनी ऑफ द फोर गॉस्पल्स* (सिनसिनाटी: स्टैंडर्ड पब्लिशिंग कं., 1914), 268. [5]डी. मार्टिन लॉयड-जोनस, *स्टडीज़ इन द सरमन ऑन द माउंट,* अंक 2 (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1959), 261. [6]एच. लियो बोल्स, *ए कमैंट्री ऑन द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू* (नैशविल्ले: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1976), 181. [7]न्याय का दिन शेखी मारने का दिन नहीं बल्कि अपने आप को परमेश्वर के अनुग्रह पर फेंक देने का दिन और प्रेम के उसके दान के लिए महिमा करने का दिन होगा। [8]*Homolegeo* एक मिश्रित शब्द है जिसका अक्षरश: अर्थ ''वही बात बोलना'' है (*lego* [''बोलना''] और *homos* [''वही'']) (डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ. अंगर एण्ड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोजिटरी डिक्शनरी ऑफ ओल्ड एण्ड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* [नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985], 120)। [9]रॉबर्ट एच. माउंस, *मैथ्यू,* न्यू इंटरनैशनल बिब्लिकल कमैंट्री (पीबॉडी, मैसाचुएट्स: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1991), 71. [10]वाइन, 346.

[11]भजन संहिता 6:8 से तुलना करें। [12]''कुकर्म'' (*anomia-nomos* [''व्यवस्था''] पूर्वसर्ग *a* में नकारात्मक बनाया गया) का अनुवाद है। KJV में ''अधर्म'' है। [13]जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट, *दि मैसेज ऑफ सरमन ऑन द माउंट,* दि बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1978), 210. [14]आर्चिबल्ड थॉमस रॉबर्टसन, *वर्ड पिक्चर्स इन द न्यू टैस्टामेंट,* अंक 1 (नैशविल्ले: ब्रॉडमैन प्रैस, 1930), 63. [15]वाइन, 679. [16]फलस्तीन पर फीचर पढ़ते हुए मुझे ऑस्ट्रेलिया में हमें डेनिस सिमंस द्वारा एक ट्रिप पर ले जाने की बात याद आती है। हम एक ढलान पर, ऐसी ढलान जो दर्रे के नीचे जाती थी, एक छोटे नाले के पास रुक गए। हमने पेड़ों में कूढ़े का पड़ा ढेर देखा और डेनिस को इसके बारे में पूछा। ''बारिश आने पर पानी इतना ऊंचा ला जाता है,'' उसने कहा। मैं गर्ज की आवाज़ सुनते हुए रात भर जागता रहा। [17]''बुद्धिमान बनाने वाले के *बाढ़* के खतरे वाले स्थान पर घर बनाने की दूरअन्देशी की कमी [थी] या नहीं, वह यहां नहीं आती। क्योंकि यीशु की कहानी की वास्तविक जीवन की प्रासंगिकता में, ऐसी कोई जगह नहीं है जहां हम परीक्षा से अपने आपको और उन संकटों से जो हमें पूरी तरह से तबाह कर देते हैं बचाने वाले अपने स्वभाव को बना सकें'' (हेरल्ड फाउलर, *मैथ्यू 1,* बाइबल स्टडी टैक्सटबुक सीरीज़ [जोप्लिन, मिजोरी: कॉलेज प्रैस, 1968], 437)। [18]KJV में ''a rock'' (एक चट्टान) है। परन्तु यूनानी धर्मशस्त्र में ''rock'' के लिए निश्चित उपपद (''the'') नहीं है। [19]हो सकता है ऐसा न हो। आयत 26 में ''रेत'' से पहले मिलने वाला उपपद भी है और ऐसा लगता है कि उस हवाले में निश्चित उपपद का कोई विशेष महत्व नहीं है। [20]अज्ञात, ''चट्टान पर बुद्धिमान ने बनाया अपना घर''; http://www.ebibleteacher.com/children/songs.htm#Wise%20Man; इंटरनेट; 10 जुलाई 2008 को देखा गया।

[21]मैं नये शब्दों के साथ जान के लिए हाथ के नये इशारे ही सिखा सकता हूं। ''प्रभु का वचन'' गाते हुए हम खुली बाइबल की तरह हाथों को रखते हैं। ''जब हम उसकी इच्छा मानते'' गाते हुए हम एक उंगली से ऊपर को इशारा करते हैं। [22]वाइन, 246. [23]डिक मरसियर, ''व्हट आर यू बिल्डिंग ऑन?'' *स्टेफोर्ड स्टैंडर्ड,* स्टेफोर्ड चर्च

ऑफ क्राइस्ट, स्टेफोर्ड, टैक्सस (29 जनवरी 1985) का साप्ताहिक बुलेटिन।[24]नीतिवचन 10:25 से तुलना करें। [25]बोल्स, 184. [26]अल्बर्ट बार्नस, *नोट्स ऑन द न्यू टैस्टामेंट: मैथ्यू एण्ड मार्क,* संपा. रॉबर्ट फ्रयू (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1970), 82. [27]''ये बातें कह चुका'' संकेत देता है कि उपदेश यीशु की शिक्षाओं के संगह के बजाय एक ही प्रस्तुति में था। [28]माउंस, 71. ***Ekplesso*** एक मिश्रित शब्द है: ***ek*** में साथ (***plesso***) ''माना'' (वाइन, 25)।[29]लेंसकी में ''डम्बफाउंडड'' है (आर. सी. एच. लेंस्की, *दि इंटरप्रिटेशन ऑफ़ सेंट मैथ्यू'स गॉस्पल* [मिनियापुलिस, मिनेसोटा: आगस्बर्ग पब्लिशिंग हाउस, 1943], 314)। [30]''अधिकारी'' का अनुवाद ***exousia*** से किया गया है।

[31]मैक्गर्वे, 166. [32]मैक्गर्वे, 167 में इसका एक उदाहरण है। [33]रॉबर्टसन, 63. [34]ए. बी. ब्रूस, ''कमैंट्री ऑन द सिनाप्टिक गॉस्पल्स,'' *दि एक्सपोजिस्टर'स ग्रीक टैस्टामेंट,* संपा. डब्ल्यू. रॉबर्टसन निकोल (लंदन: हॉडर, 1897), 136. [35]माउंस, 70. [36]ई. स्टेनली जोन्स, *दि क्राइस्ट ऑफ द माउंट* (न्यू यॉर्क: अबिंग्डन प्रैस, 1931), 296. [37]स्टॉट, 222.